-------- Click on the --------
Download Link
To view the complete book

शेमुषी

द्वितीयो भागः

दशमकक्षायाः संस्कृतपाठ्यपुस्तकम्

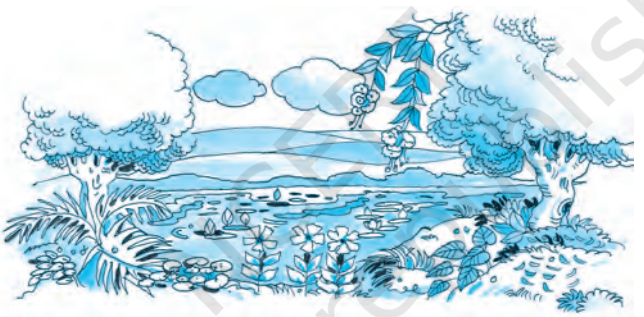

1061

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

2022-23

© NCERT not to be republished

1061 – शेमुषी
कक्षा 10 के लिए पाठ्यपुस्तक

ISBN 81-7450-642-X

प्रथम संस्करण
दिसंबर 2006 पौष 1928

पुनर्मुद्रण
अक्तूबर 2007 आश्विन 1929
जनवरी 2009 पौष 1930
जनवरी 2010 माघ 1931
मार्च 2013 फाल्गुन 1934
नवंबर 2013 कार्तिक 1935
नवंबर 2014 अग्रहायण 1936
दिसंबर 2015 पौष 1937
जनवरी 2017 पौष 1938
जनवरी 2018 माघ 1939
अप्रैल 2019 चैत्र 1941
अक्तूबर 2019 अश्विन 1941
जनवरी 2021 पौष 1942

PD 80T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2006

₹ 60.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा शिवा प्रिंटटेक प्रा. लि., पॉकेट नं. 1, प्लॉट नं. 59, सेक्टर 5, बवाना इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली - 110 039 द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108ए 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक (प्रभारी) : *विपिन दिवान*
सहायक संपादक : *ओम प्रकाश*
उत्पादन सहायक : *सुनील कुमार*

आवरण
करन चड्ढा

चित्रांकन
अरूप गुप्ता एवं सुजीत सिंह

© NCERT not to be republished

-------- Click on the --------
Download Link
To view the complete book

पुरोवाक्

2005 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-पाठ्यचर्या-रूपरेखायाम् अनुशंसितं यत् छात्राणां विद्यालयजीवनं विद्यालयेतरजीवनेन सह योजनीयम्। सिद्धान्तोऽयं पुस्तकीय-ज्ञानस्य तस्याः परम्परायाः पृथक् वर्तते, यस्याः प्रभावात् अस्माकं शिक्षाव्यवस्था इदानीं यावत् विद्यालयस्य परिवारस्य समुदायस्य च मध्ये अन्तरालं पोषयति। राष्ट्रियपाठ्यचर्यावलम्बितानि पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकानि अस्य मूलभावस्य व्यवहारदिशि प्रयत्न एव। प्रयासेऽस्मिन् विषयाणां मध्ये स्थितायाः भित्तेः निवारणं ज्ञानार्थं रटनप्रवृत्तेश्च शिथिलीकरणमपि सम्मिलितं वर्तते। आशास्महे यत् प्रयासोऽयं 1986 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-शिक्षा-नीतौ अनुशंसितायाः बालकेन्द्रितशिक्षाव्यवस्थायाः विकासाय भविष्यति।

प्रयत्नस्यास्य साफल्यं विद्यालयानां प्राचार्याणाम् अध्यापकानाञ्च तेषु प्रयासेषु निर्भरं यत्र ते सर्वानपि छात्रान् स्वानुभूत्या ज्ञानमर्जयितुं, कल्पनाशीलक्रियाः विधातुं, प्रश्नान् प्रष्टुं च प्रोत्साहयन्ति। अस्माभिः अवश्यमेव स्वीकरणीयं यत् स्थानं, समयः, स्वातन्त्र्यं च यदि दीयेत, तर्हि शिशवः वयस्कैः प्रदत्तेन ज्ञानेन संयुज्य नूतनं ज्ञानं सृजन्ति। परीक्षायाः आधारः निर्धारित-पाठ्यपुस्तकमेव इति विश्वासः ज्ञानार्जनस्य विविधसाधनानां स्रोतसां च अनादरस्य कारणेषु मुख्यतमम्। शिशुषु सर्जनशक्तेः कार्यारम्भप्रवृत्तेश्च आधानं तदैव सम्भवेत् यदा वयं तान् शिशून् शिक्षणप्रक्रियायाः प्रतिभागित्वेन स्वीकुर्याम, न तु निर्धारितज्ञानस्य ग्राहकत्वेन एव।

इमानि उद्देश्यानि विद्यालयस्य दैनिककार्यक्रमे कार्यपद्धतौ च परिवर्तनमपेक्षन्ते। यथा दैनिक-समय-सारण्यां परिवर्तनशीलत्वम् अपेक्षितं तथैव वार्षिककार्यक्रमाणां निर्वहणे तत्परता आवश्यकी येन शिक्षणार्थं नियतेषु कालेषु वस्तुतः शिक्षणं भवेत्। शिक्षणस्य मूल्याङ्कनस्य च विधयः ज्ञापयिष्यन्ति यत् पाठ्यपुस्तकमिदं छात्राणां विद्यालयीय-जीवने आनन्दानुभूत्यर्थं कियत् प्रभावि वर्तते, न तु नीरसतायाः साधनम्। पाठ्यचर्याभारस्य निदानाय पाठ्यक्रमनिर्मातृभिः बालमनोविज्ञानदृष्ट्या अध्यापनाय उपलब्ध-कालदृष्ट्या च विभिन्नेषु स्तरेषु विषयज्ञानस्य पुनर्निर्धारणेन प्रयत्नो विहितः। 2017 तमे वर्षे पुनरीक्षितमिदं पुस्तकं छात्राणां कृते चिन्तनस्य, विस्मयस्य, लघुसमूहेषु वार्तायाः, कार्यानुभवादि-गतिविधीनां च कृते प्राचुर्येण अवसरं ददाति। पाठ्यपुस्तकस्यास्य विकासाय विशिष्टयोगदानाय राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद् भाषापरामर्शदातृसमितेः अध्यक्षाणां प्रो. नामवरसिंहमहोदयानां, संस्कृतपाठ्यपुस्तकानां

© NCERT not to be republished

मुख्यपरामर्शकानां प्रो. राधावल्लभ-त्रिपाठिमहाभागानां, पाठ्यपुस्तकनिर्माणसमितेः सदस्यानाञ्च कृते हार्दिकीं कृतज्ञतां ज्ञापयति। पुस्तकस्यास्य विकासे नैके विशेषज्ञाः अनुभविनः शिक्षकाश्च योगदानं कृतवन्तः, तेषां संस्थाप्रमुखान् संस्थाश्च प्रति धन्यवादो व्याह्रियते। मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयस्य माध्यमिकोच्चशिक्षाविभागेन प्रो. मृणालमिरी प्रो. जी.पी. देशपाण्डेमहोदयानाम् आध्यक्षे संघटिताया: राष्ट्रिय-पर्यवेक्षणसमितेः सदस्यान् प्रति तेषां बहुमूल्ययोगदानाय वयं विशेषेण कृतज्ञाः।

पाठ्यपुस्तकविकासक्रमे उन्नतस्तराय निरन्तरं प्रयत्नशीला परिषदियं छात्राणां कृते पुस्तकमिदं उपयुक्ततरं कर्तुं विशेषज्ञैः अनुभविभिः अध्यापकैश्च प्रेषितानां सत्परामर्शानां सदैव स्वागतं विधास्यति।

नव देहली
20 नवम्बर 2017

निदेशकः
राष्ट्रियशैक्षिकानुसंधानप्रशिक्षणपरिषद्

© NCERT not to be republished

भूमिका

संस्कृत की गणना विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में की जाती है। इसका साहित्यिक विस्तार वैदिक युग से लेकर आज तक अबाध रूप से चल रहा है। मानवीय चिंतन के सभी क्षेत्रों में इसकी अभिव्यक्ति हुई है। युग-परिवर्तन के साथ-साथ इसके आयाम भी बदलते रहे हैं। भाषा और साहित्य की व्यापकता को देखकर इसे देववाणी भी कहा जाता था जो इसके प्रति भारतीयों की श्रद्धा का परिचायक है।

संस्कृत का प्राचीन साहित्य जीवन-मूल्यों के प्रति (जैसे परोपकार, दान, सत्य, अहिंसा, राष्ट्र-भक्ति, पृथ्वी-प्रेम, सत्कर्म इत्यादि) आदर्श की स्थिति का आकलन करता है। इसका आधुनिक साहित्य प्राचीन मूल्यों के अतिरिक्त मानव की समकालीन समस्याओं और जीवन-संघर्षों को भी निरूपित करता है। अतः विश्व के अन्य साहित्य की तुलना में संस्कृत की संवेदनशीलता को न्यूनतर आँकना ठीक नहीं कहा जा सकता है। यह गौरव का विषय है कि चार हजार वर्षों से भी अधिक संस्कृत साहित्य-धारा में भारतीय समाज का प्रत्यंकन प्रायः प्रामाणिक रूप से होता रहा है।

संस्कृत का महत्त्व केवल प्राचीनता अथवा विषय-व्यापकता की दृष्टि से ही नहीं, अपितु देश के बहुभाषिक परिदृश्य में राष्ट्र की एकता के लिए भी सर्वोपरि है। भारत की अन्य भाषाओं पर संस्कृत के व्याकरण शब्द-संपत्ति तथा वाक्य-रचना का व्यापक प्रभाव प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पड़ा है। आधुनिक संस्कृत अन्य भाषाओं के समान भारतीय बहुभाषिकता का एक अभिन्न अंग है। बहुभाषी कक्षा में अन्य भाषाओं को सीखने में जिस प्रकार संस्कृत सहायक है, उसी प्रकार कक्षा में उपलब्ध बहुभाषिकता (Multilingualism) का संस्कृत सीखने में भी उपयोग हो सकता है।

प्राचीन संस्कृत साहित्य दो रूपों में (वैदिक तथा लौकिक) उपलब्ध है। वैदिक साहित्य संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद् के रूप में है। **ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद** तथा **अथर्ववेद** इन चारों को **संहिता** कहते हैं जिनमें यज्ञ तथा अन्य विषयों के मन्त्रों का संकलन है। इन मन्त्रों का उपयोग बताने के लिए कई ब्राह्मण ग्रन्थ लिखे गये हैं। वैदिक कर्मकाण्ड की प्रतीकात्मक व्याख्या **आरण्यक** में है, उपनिषद् वैदिक दर्शन का प्रौढ़ रूप है। वेदों को सही संदर्भ में समझने के लिए वेदाङ्ग बने जिनकी

© NCERT not to be republished